MAKTABA TUL MADINA

21 ज़िल क़ा'दतुल ह़राम 1439 हिजरी को होने वाले मदनी मुज़ाकरे का तह़रीरी गुलदस्ता

मल्फ़ूज़ाते अमीरे अह्ले सुन्नत (क़िस्त़ : 6)

दरख़्त लगाइये सवाब कमाइये

पौदे लगाने के फ़ज़ाइल 06

शजरकारी के साइन्सी फ़वाइद 07

शजरकारी के मआ़शी और मुआ़शरती फ़वाइद 09

शजरकारी मुहिम और इस की एह़तियातें 12

कौन से पौदे लगाना ज़ियादा मुफ़ीद हैं ? 16

मल्फ़ूज़ात :

शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(مستطرف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) (تاريخ دمشق لابن عساكر ج ٥١ ص ١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

मजलिसे तराजिम हिन्द (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ येह रिसाला मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है । मजलिसे तराजिम (हिन्द) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लत़ी पाएं तो मजलिस को सफ़ह़ा और सत़र नम्बर के साथ Sms, E-mail, Whats App या Telegram के ज़रीए इत्तिलाअ़ दे कर सवाबे आख़िरत कमाइये ।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं !!!

...राबित़ा :-

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदाबाद-1, गुजरात (हिन्द)

+91 98987 32611

E-mail : hindibook@dawateislamihind.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ی	ु = و	आ = آ	य = ی	ह = ھ	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दरख़्त लगाइये सवाब कमाइये[1]

शैतान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (24 सफ़्हात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

नबिये अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूद पढ़ना बरोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा।[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

पौदे लगाना कैसा ?

सुवाल : पौदे लगाना कैसा है ?

जवाब : पौदे लगाना हमारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه फ़रमाते हैं : मैं हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

مدینہ

1....येह रिसाला 21 ज़ी क़ा'दतुल हराम सिने 1439 हिजरी ब मुताबिक़ 04 अगस्त 2018 को आलमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना (कराची) में "शजरकारी" के मुतअल्लिक़ होने वाले मदनी मुज़ाकरे का तहरीरी गुलदस्ता है, जिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा" ने मुरत्तब किया है। (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

2.....جامع صغیر، حرف الزای، ص۲۸۰، حدیث:۴۵۸۰ دار الکتب العلمیۃ بیروت

की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा और मोहरे नबुव्वत देख कर उस को बोसे देने लगा। मैं अभी हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मोहरे नबुव्वत को बोसे ही दे रहा था कि आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "अब बस करो।" चुनान्चे, मैं एक त़रफ़ हट गया, फिर मैं ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपनी सारी रूदाद सुनाई तो हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان बहुत ह़ैरान हुए कि मैं किस त़रह़ मशक़्क़तें और अज़िय्यतें बरदाश्त कर के यहां तक पहुंचा।

एक दिन सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ से फ़रमाया : ऐ सलमान (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) ! तुम अपने मालिक से मुकातबत कर लो (या'नी उसे रक़म दे कर आज़ादी ह़ासिल कर लो) जब मैं ने अपने मालिक से बात की तो उस ने कहा : मुझे 300 खजूरों के दरख़्त लगा दो और 40 ऊक़िया (या'नी 1600 दिरहम के वज़्न की) चांदी भी दो फिर जब येह खजूरें फल देने लग जाएंगी तो तुम मेरी त़रफ़ से आज़ाद हो जाओगे। मैं आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में ह़ाज़िर हुवा और अपने मालिक की शर्तें आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बताईं। आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : अपने भाई की मदद करो। चुनान्चे, सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने भरपूर तआ़वुन किया, किसी ने खजूरों के 30 पौदे ला कर दिये, किसी ने 20, किसी ने 15 और किसी ने 10। अल ग़रज़ ! सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मदद से मेरे पास 300 खजूरों के पौदे जम्अ़ हो गए। फिर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ सलमान (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه) तुम जाओ और ज़मीन को हमवार करो। जब ज़मीन हमवार

हो जाए तो मुझे आ कर ख़बर दो मैं अपने हाथों से पौदे लगाऊंगा। चुनान्चे, मैं गया और ज़मीन हमवार करने लगा, सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ज़मीन हमवार करने में मेरी मदद की। जब मैं फ़ारिग़ हो कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में हाज़िर हुवा और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को ख़बर दी तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे साथ चल दिये। हम हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को खजूरों के पौदे उठा उठा कर देते और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने दस्ते अक़्दस से उन्हें ज़मीन में लगाते जाते।

हज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जितने पौदे लगाए वोह सब के सब उग आए और उन में बहुत जल्द फल लगने लगे। चुनान्चे, मैं ने 300 खजूरों के दरख़्त अपने मालिक के ह़वाले किये। अब मेरे ज़िम्मे 40 ऊक़िया चांदी देना बाक़ी रह गई थी। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास किसी ने मुर्ग़ी के अन्डे जितना सोने का एक टुकड़ा भेजा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्तिफ़्सार फ़रमाया : सलमान फ़ारसी का क्या हुवा ? फिर मुझे बुलवाया, मैं ने अ़र्ज़ की : अभी 40 ऊक़िया चांदी और देनी है, फिर मुझे ग़ुलामी से आज़ादी मिलेगी।

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे वोह सोने का टुकड़ा दिया और फ़रमाया :) जाओ और इस के ज़रीए़ 40 ऊक़िया चांदी जो तुम्हारे ज़िम्मे बाक़ी है उसे अदा करो। मैं ने अ़र्ज़ की : येह इतना सा सोना 40 ऊक़िया चांदी के बराबर किस त़रह़ होगा ?

आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम येह सोना लो और इस के ज़रीए 40 ऊक़िया चांदी जो तुम्हारे ज़िम्मे है, उसे अदा करो, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे लिये इसी सोने को काफ़ी कर देगा और तुम्हारे ज़िम्मे जितनी चांदी है येह उस के बराबर हो जाएगा। मैं ने वोह सोने का टुकड़ा लिया और उस का वज़्न किया। उस पाक परवर दगार عَزَّوَجَلَّ की क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! वोह थोड़ा सा सोना 40 ऊक़िया चांदी के बराबर हो गया और इस त़रह़ मैं ने अपने मालिक को चांदी दे दी और ग़ुलामी की क़ैद से आज़ाद हो कर सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ग़ुलामों में शामिल हो गया।[1]

एक रिवायत में है सारे पौदे सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने दस्ते मुबारक से लगाए, सिवाए एक पौदे के वोह ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने लगाया।[2]

अह्ले फ़ारस की त़वील उ़म्र होने की वज्ह

ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़ारस के रहने वाले थे। फ़ारस के रहने वाले लोगों की उ़म्रें त़वील होती थी, इस की वज्ह बयान करते हुए मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : "फ़ारस के बादशाह नहरों की खुदाई और शजरकारी में बहुत रग़बत रखते थे इसी वज्ह से उन की उ़म्रें भी लम्बी हुवा करती थीं। एक नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़ारस के लोगों की लम्बी उ़म्र से मुतअ़ल्लिक़ **अल्लाह** पाक की बारगाह में इस्तिफ़्सार किया तो **अल्लाह** पाक ने उन की त़रफ़ वही फ़रमाई

مدینہ

1 ..... مسند امام احمد، حدیث سلمان الفارسی، ۹/۱۸۹، حدیث: ۲۳۷۹۸ ملتقطاً دار الفکر بیروت

2 ..... دلائل النبوۃ، باب ماظھر فی النخل التی غرسھا النبی صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم... الخ، ۶/۹۷ دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

कि येह लोग मेरे शहर को आबाद करते हैं, इसी वज्ह से येह दुन्या में ज़ियादा अ़र्सा ज़िन्दा रहते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने भी अपनी आख़िरी उ़म्र में खेतीबाड़ी का काम शुरूअ़ कर दिया था।[1]

बहर ह़ाल इन रिवायात से मा'लूम हुवा कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पौदे लगाए हैं और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان भी शजरकारी किया करते थे।[2] अगर हम भी सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की इन मुबारक अदाओं को अदा करने की निय्यत से पौदे लगाएंगे तो اِنْ شَآءَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सवाब पाएंगे।

पौदे लगाने के फ़ज़ाइल

सुवाल : क्या पौदे लगाने के फ़ज़ाइल भी हैं ?

जवाब : जी हां ! अह़ादीसे मुबारका में पौदे लगाने के फ़ज़ाइल भी बयान हुए हैं। पौदे लगाने के फ़ज़ाइल पर तीन फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा कीजिये : (1) जो मुसलमान दरख़्त लगाए या फ़स्ल बोए फिर उस में से जो परन्दा या इन्सान या

---

1 ..... تفسیر کبیر، پ۱۲، ھود، تحت الآیۃ: ۶۱، ۶/۳۶۷ دار احیاء التراث العربی بیروت

2 ....जैसा कि एक बार मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को मुलाह़ज़ा फ़रमाया कि एक पौदा लगा रहे हैं। इस्तिफ़्सार फ़रमाया : क्या कर रहे हो ? अ़र्ज़ की : दरख़्त लगा रहा हूं। फ़रमाया : मैं बेहतरीन दरख़्त लगाने का त़रीक़ा बता दूं ! سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ وَلَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَاللّٰہُ اَکْبَر पढ़ने से हर कलिमे के इ़वज़ (या'नी बदले) जन्नत में एक दरख़्त लग जाता है। (اِبن ماجہ، کتاب الادب، باب فضل التسبیح، ۴/۲۵۲، حدیث: ۳۸۰۷ دار المعرفۃ بیروت) इस रिवायत से जहां येह मा'लूम हुवा कि पौदे लगाना सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان का भी त़रीक़ा है वहां येह भी मा'लूम हुवा कि इन मज़्कूरा कलिमात को पढ़ने से हर हर कलिमे के बदले जन्नत में एक एक दरख़्त लगा दिया जाता है। (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

चोपाया खाए तो वोह उस की त़रफ़ से सदक़ा शुमार होगा।[1]

(2) जिस ने कोई दरख़्त लगाया और उस की ह़िफ़ाज़त और देख भाल पर सब्र किया यहां तक कि वोह फल देने लगा तो उस में से खाया जाने वाला हर फल **अल्लाह** पाक के नज़्दीक उस (लगाने वाले) के लिये सदक़ा है।[2]

(3) जिस ने किसी ज़ुल्मो ज़ियादती के बिग़ैर कोई घर बनाया या ज़ुल्मो ज़ियादती के बिग़ैर कोई दरख़्त उगाया, जब तक **अल्लाह** पाक की मख़्लूक़ में से कोई एक भी उस में से नफ़्अ़ उठाता रहेगा तो उस (लगाने वाले) को सवाब मिलता रहेगा।[3]

पौदे लगाने की एह़तियातें

सुवाल : पौदे लगाने के बा'द क्या क्या एह़तियातें करनी चाहियें ?

जवाब : पौदे लगाने के बा'द उन की निगहदाश्त रखना, उन को वक़्त पर पानी देना और उन के दरख़्त बन जाने तक ख़ूब एह़तियात़ करना ज़रूरी है। अगर ऐसा न किया गया तो येह पौदे चन्द ही दिनों में मुरझा कर ख़त्म हो जाएंगे या फिर किसी जानवर की ग़िज़ा बन जाएंगे। याद रखिये ! पौदे की मिसाल छोटे बच्चे की त़रह़ है, जिस त़रह़ वालिदैन छोटे बच्चे की हर चीज़ का ख़याल रखते हैं और ख़ूब तन देही से उस की परवरिश करते हैं, अगर थोड़ी सी बे तवज्जोही हो जाए तो बच्चा कई बीमारियों की ज़द में आ

مدینہ

1 ..... بخاری، کتاب الحرث والمزارعة، باب فضل الزرع والغرس اذا اکل منه، ۲/۸۵، حدیث: ۲۳۲۰ دار الکتب العلمیة بیروت

2 ..... مسند امام احمد، حدیث عمرو بن القاری عن ابیه عن جده، ۵/۵۷۴، حدیث: ۱۶۵۸۶

3 ..... مسند امام احمد، حدیث معاذ بن انس الجهنی، ۵/۳۰۹، حدیث: ۱۵۶۱۶

www.dawateislami.net

सकता है, इसी त़रह़ पौदों का भी मुआ़मला है कि अगर इन की दुरुस्त अन्दाज़ में आबयारी न की गई और इन्हें ऐसे ही लगा कर छोड़ दिया गया तो येह दरख़्त बनने से पहले ही मुरझा जाएंगे। अलबत्ता जब येह पौदे तन आवर दरख़्त बन जाएं तो फिर इन्हें ख़ास तवज्जोह की ह़ाजत व ज़रूरत नहीं रहती बल्कि दरख़्त बन जाने के बा'द येह अज़ ख़ुद बाक़ी रह सकते हैं। नीज़ पौदे लगाने के बा'द इन की सफ़ाई सुथराई और कांट छांट का भी ख़याल रखना ज़रूरी है ताकि किसी को भी इन की शाख़ों और इन से झड़ने वाले पत्तों वग़ैरा से ईज़ा न हो।

शजरकारी के साइन्सी फ़वाइद

सुवाल : साइन्सी ए'तिबार से शजरकारी के कुछ फ़वाइद बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : साइन्सी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ भी शजरकारी के बड़े फ़वाइद हैं। दरख़्त और पौदे कारबन डायॉक्साईड लेते और ऑक्सीजन फ़राहम करते हैं। ऑक्सीजन इन्सानी ज़िन्दगी के लिये इन्तिहाई ज़रूरी है, इस के बिग़ैर इन्सान ज़िन्दा नहीं रह सकता। **अल्लाह** पाक ने दरख़्तों और पौदों को इन्सान की ख़िदमत के लिये लगाया हुवा है, येह गन्दी हवा ले कर अपनी पाकीज़ा हवा देते हैं। दरजए ह़रारत को बढ़ने नहीं देते, दरख़्त और पौदे फ़ज़ाई आलूदगी (या'नी धूआं और गर्द वग़ैरा जो उड़ती रहती है उस) में कमी करते हैं, दरख़्त और पौदों की कसरत से माह़ोल ठन्डा और ख़ुशगवार रहता है, इस से बिजली की भी बचत होती है क्यूंकि जो आलात गर्मी दूर करने के लिये इस्ति'माल होते हैं उन की ज़रूरत में कमी आ जाती है या बिल्कुल ही छुटकारा मिल जाता है। अगर आप अपने वत़ने अ़ज़ीज़

को इस त़रह़ दरख़्तों और पौदों से आरास्ता करेंगे तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बिजली की भी बचत होगी।

दरख़्त लेन्ड स्लाइडिंग (या'नी मिट्टी या चट्टान के तूदे का फिसल कर ऊंची जगह से गिरने) की रोक थाम का भी बाइस बनते हैं, क्यूंकि दरख़्त की जड़ें ज़मीन की मिट्टी को रोक कर रखती हैं, जिस की वज्ह से ज़मीन का कटाव या लेन्ड स्लाइडिंग नहीं होने पाती। यूं ही दरख़्त और पौदे "**ग्लोबल वॉरमिंग**" में भी कमी का सबब बनते हैं। आ़लमी माह़ोल के दरजए ह़रारत में ख़त़रनाक ह़द तक इज़ाफ़ा "**ग्लोबल वॉरमिंग**" कहलाता है, जिस की वुजूहात में दरख़्तों का काटना, सन्अ़तों का तेज़ी से क़ियाम में लाना और गाड़ियों का बे तह़ाशा धूआं शामिल है। अगर दरख़्तों की ह़िफ़ाज़त की जाए बल्कि मज़ीद दरख़्त लगाने का एहतिमाम किया जाए तो इन ख़त़रनाक नुक़्सानात से बचने का भी सामान हो सकता है।

शजरकारी के मआ़शी और मुआ़शरती फ़वाइद

सुवाल : शजरकारी से क्या क्या मआ़शी और मुआ़शरती फ़वाइद ह़ासिल होते हैं ?

जवाब : शजरकारी (या'नी दरख़्त लगाने) के ज़रीए बहुत से मआ़शी और मुआ़शरती फ़वाइद ह़ासिल होते हैं मसलन दरख़्त लकड़ी के हुसूल का ज़रीआ़ हैं और लकड़ी का इन्सानी ज़रूरिय्यात को पूरी करने में कलीदी किरदार है। फ़र्नीचर, खिड़कियां, दरवाज़े और मकान की छतें वग़ैरा बनाने के लिये अब भी ज़ियादा तर लकड़ी का ही इस्ति'माल होता है। बिला मुबालग़ा लकड़ी की सन्अ़त से मुआ़शरे के एक बहुत बड़े त़बक़े का रोज़गार वाबस्ता है। बिलफ़र्ज़

अगर लकड़ी दुन्या से ख़त्म हो जाए तो इन्सानी ज़िन्दगी बहुत ज़ियादा मुतअस्सिर हो जाए क्यूंकि इन्सान को ज़िन्दा रहने के लिये खाना चाहिये और खाना पकाने के लिये आग और आग जलाने के लिये लकड़ी का इस्ति'माल अब भी नागुज़ीर है।

۞ मौजूदा दौर में काग़ज़ भी इन्सानी ज़िन्दगी की बुन्यादी ज़रूरत का रूप धार चुका है। प्रिन्टिंग प्रेस, स्टेशनरी और दीगर कई शो'बे काग़ज़ के बल बूते पर ही क़ाइम हैं। अगर दरख़्त ख़त्म हो जाएं तो काग़ज़ से वाबस्ता सारे शो'बे भी बन्द हो जाएं इस लिये कि काग़ज़ का हुसूल दरख़्तों की ही मरहूने मिन्नत है।

۞ इन्सानी सिह़्ह़त के लिये फलों और मेवाजात की अहम्मिय्यत का भी कोई समझ बूझ रखने वाला इन्कार नहीं कर सकता और येह दरख़्त ही हैं जो इन्सान को अन्वाओ़ अक़्साम के फल और मेवे मुहय्या करते हैं बल्कि कई परन्दे और जानवर भी इन फलों को खा कर ही जीते हैं। इस के इ़लावा मुआ़शरे में बहुत से अफ़राद की मई़शत बाग़बानी और फल फ़रोशी से जुड़ी हुई है।

۞ बीमारी से मह़फ़ूज़ रहने या बीमारी से जान छुड़ाने के लिये जड़ी बूटियों का इस्ति'माल इन्सानी तारीख़ का ह़िस्सा है और येह बात किसी से भी पोशीदा नहीं कि जड़ी बूटियां दरख़्तों और पौदों से ही ह़ासिल की जाती हैं। यहां येह बात भी ज़ेह्न नशीन कर लीजिये कि जो दवा दरख़्त या पौदे की जड़ से ह़ासिल हो उसे "**जड़ी**" और जो ऊपर उगी हो उसे "**बूटी**" कहते हैं।

۞ मिस्वाक करना हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मीठी मीठी सुन्नत है, इस सुन्नत की अदाएगी के लिये भी शजरकारी करनी होगी क्यूंकि मिस्वाक दरख़्तों से ही ह़ासिल होती है।

❁ क़हत़ साली या'नी बारिशों का बन्द हो जाना इन्सानों के साथ साथ परन्दों, जानवरों और ह़शरातुल अ़र्ज़ की सांसों की डोरी टूटने का भी पैग़ाम है। बारिश होती है तो अनाज और सब्ज़ा उगता है और जानदार अपनी अपनी ग़िज़ाएं खा कर ज़िन्दगी की शम्अ़ रौशन रखते हैं। तो उन बारिशों को बरसाने में भी दरख़्तों का किरदार है इस लिये कि दरख़्त अपनी जड़ों में जज़्ब शुदा पानी को हवा में ख़ारिज करते हैं जिस से फ़ज़ा में नमी पैदा होती है। फिर येह नमी बादल बनाती है और वोह बादल रिम झिम रिम झिम बरसना शुरूअ़ हो जाते हैं। ज़मीन ज़र ख़ेज़ हो कर अनाज, फल और सब्ज़ियां उगाती है। दरख़्त अपनी जड़ों में पानी मह़फ़ूज़ कर लेते हैं और फिर क़ह़त़ साली के अय्याम में ज़मीन को पानी फ़राहम कर के बन्जर होने से बचाते हैं। अगर दरख़्त न हों तो बारिशें भी न हों लिहाज़ा ज़िन्दा रहने के लिये शजरकारी ज़रूरी है।

❁ शोर शराबा इन्सान के लिये बे सुकूनी और ज़ेह्नी तनाव का सबब बनता है। नई तह़क़ीक़ से येह बात सामने आई है कि दरख़्त शोर शराबे को अपने अन्दर जज़्ब कर के पुर सुकून माह़ोल फ़राहम करते हैं, इसी बिना पर इन्डस्ट्रियल ज़ोन या'नी जहां बहुत सारी फ़ेक्ट्रियां हों उस अ़लाक़े में ज़ियादा से ज़ियादा दरख़्त लगाए जाते हैं ताकि शोर शराबा कम कर के माह़ोल पुर सुकून बनाया जा सके।

❁ कपड़ा इन्सान की बुन्यादी ज़रूरत है इस के बिग़ैर ज़िन्दगी गुज़ारना भी इन्तिहाई दुश्वार है। लाखों लाख इन्सानों का रोज़गार कपड़े की सन्अ़त से जुड़ा हुवा है। हमारी इस ज़रूरत को पूरा करने का सेहरा भी दरख़्तों के सर है इस लिये कि कपड़ा कपास (Cotton) के पौदे से ह़ासिल होता है।

۞ दरख़्तों और पौदों के तिब्बी फ़वाइद के साथ साथ तर्बिय्यती फ़वाइद भी हैं मसलन औलाद की पैदाइश में मुआविन कुव्वत के लिये भी दरख़्त मुफ़ीद होते हैं। माहिरीन के मुताबिक़ दरख़्तों के दरमियान रहने वाले इन्सान की तख़्लीक़ी सलाहिय्यतों में इज़ाफ़ा होता है। इसी बिना पर शहरी अ़लाक़ों में क़ाइम ता'लीमी इदारों के गिर्द ज़ियादा से ज़ियादा दरख़्त लगाए जाते हैं ताकि त़लबा की तख़्लीक़ी सलाहिय्यतों में ख़ूब इज़ाफ़ा हो। बहर ह़ाल दरख़्तों के बहुत से फ़वाइद हैं जिन्हें पाने के लिये ख़ूब ख़ूब दरख़्त लगाने की ह़ाजत व ज़रूरत है।

शजरकारी मुहिम की अच्छी अच्छी निय्यतें

सुवाल : शजरकारी के लिये क्या क्या अच्छी निय्यतें की जा सकती हैं ?

जवाब : शजरकारी (या'नी दरख़्त लगाने) के लिये बहुत सी अच्छी अच्छी निय्यतें की जा सकती हैं मसलन दरख़्त लगा कर आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अदा को अदा करूंगा, क्यूंकि दरख़्त लगाना आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है। ۞ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने भी दरख़्त लगाए और खेतीबाड़ी की लिहाज़ा शजरकारी कर के उन की अदा को अदा करूंगा। ۞ दरख़्त लगा कर माह़ौलियाती आलूदगी को कम करूंगा ताकि मुसलमानों के लिये राह़तो सुकून का सामान हो। ۞ दरख़्त लगा कर सदक़े का सवाब कमाऊंगा इस लिये कि दरख़्त ऑक्सीजन पैदा करते हैं जो इन्सानों और जानवरों के लिये यक्सां मुफ़ीद है। इस के इलावा भी ह़स्बे ह़ाल मज़ीद अच्छी अच्छी निय्यतें की जा सकती हैं।

शजरकारी मुहिम और इस की एह़तियातें

सुवाल : शजरकारी मुहिम और इस की एह़तियातें बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक दा'वते इस्लामी ने धूम धाम से शजरकारी मुहिम का आग़ाज़ किया है और वत़ने अ़ज़ीज़ में एक अरब पौदे लगाने का हदफ़ बनाया है। अगर मेरे तमाम मदनी बेटे और मदनी बेटियां कमरबस्ता हो जाएं और हर एक बारह बारह पौदे लगा ले तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारा हदफ़ पूरा हो जाएगा। हर त़रफ़ सब्ज़ा ही सब्ज़ा होगा और हमारा मुल्क सर सब्ज़ो शादाब हो जाएगा लिहाज़ा इस शजरकारी मुहिम का ह़िस्सा बनिये और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ ख़ूब ख़ूब पौदे लगाइये।

शजरकारी मुहिम में चन्द चीज़ों की एह़तियात़ करना ज़रूरी है ताकि बदमज़गी और गुनाह से बचा जा सके मसलन हुकूमत की ज़मीन पर जहां क़ानूनन मन्अ़ हो वहां न लगाइये जैसे फ़ुटपाथ उखेड़ कर पौदा लगाने की मुमानअ़त है इस लिये कि ऐसा करने से मुसाफ़िरों को चलने में दुश्वारी होगी और तोड़ फोड़ करने से हुकूमत का भी नुक़्सान होगा। (बा'ज़ लोग फ़ुटपाथ खोद कर झन्डा लगा देते हैं उन्हें भी ऐसा नहीं करना चाहिये।) ❁ किसी की ज़ाती ज़मीन पर मालिक की इजाज़त के बिग़ैर पौदा न लगाएं।

बहर ह़ाल शरीअ़त के दाइरे में रहते हुए तमाम आ़शिक़ाने रसूल शजरकारी मुहिम में शामिल हो जाएं और अपने घरों, फ़ेक्ट्रियों, दफ़ातिर और दीगर मुनासिब जगहों पर बारह बारह पौदे लगाने की निय्यत कर लें। याद रहे कि बारह पौदे लगाने हैं न कि बारह बीज बोने हैं नीज़ इस मुहिम के लिये चन्दा करने या दा'वते इस्लामी के

मदनी अ़तिय्यात से ख़र्च करने की इजाज़त नहीं। अपने पल्ले से तरकीब बनाइये या आपस में दोस्त मिल बांट कर पौदे ले आइये। कोई इस नेक काम के लिये 25000 रूपे मुख़्तस करे तो कोई 12000 रूपे तो कोई 1200 रूपे। बा'ज़ पौदे सस्ते होते हैं वोह बहुत कम क़ीमत में 12 आ जाएंगे। अगर येह भी नहीं हो सकता तो कम अज़ कम एक पौदा लगाने का तो हर एक ज़रूर ज़ेह्न बनाए। अगर जेब इजाज़त दे तो "नीम", गुलमोहर", 'लिगनम", "सहांजना" नामी पौदे लगाने का ख़ास एहतिमाम कीजिये क्यूंकि येह फ़ज़ाई आलूदगी को कम करने में ज़ियादा कार आमद हैं।

वक़्फ़ की जगहों पर दरख़्त लगाने की एह़तियातें

सुवाल : वक़्फ़ की जगहों में दरख़्त लगाने की एह़तियातें भी बयान फ़रमा दीजिये।

जवाब : वक़्फ़ की जगहों मसलन मसाजिद, मदारिस और जामिआ़त वग़ैरा में दरख़्त लगाने से पहले दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत से शरई राहनुमाई ले ली जाए इस के बा'द ही किसी वक़्फ़ की जगह पर शजरकारी का सिलसिला किया जाए। दा'वते इस्लामी के तह़्त चलने वाले मदारिसुल मदीना, जामिआ़तुल मदीना और मसाजिद के मुन्तज़िमीन वग़ैरा इन जगहों पर पौदे लगाने से पहले अपनी मुतअ़ल्लिक़ा मजलिस से मुशावरत कर लें। नीज़ येह मजालिस दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत से ख़ास उस जगह के लिये तह़रीरी फ़तवा ह़ासिल करें और इस फ़तवे को नाज़िम साहि़ब के मक्तब में आवेज़ां कर दिया जाए। दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत की त़रफ़ से जितने दरख़्त लगाने की इजाज़त मिले उतने ही दरख़्त लगाए जाएं, इस से ज़ाइद एक दरख़्त भी न लगाया जाए।

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ नई मसाजिद बनाने के लिये जो प्लॉट ख़रीदे जाएं उन में शजरकारी करने से पहले मजलिसे ख़ुद्दामुल मसाजिद और मजलिसे असासाजात के इस्लामी भाई दारुल इफ़्ता अह्ले सुन्नत से मुकम्मल राहनुमाई लें और जब तक शजरकारी के लिये तह़रीरी फ़तवे की सूरत में जगह का इन्तिख़ाब न हो जाए हरगिज़ वक़्फ़ की जगह में इस त़रह़ का तसर्रुफ़ न करें।[1]

दरख़्त लगाना मुमकिन न हो तो ?

सुवाल : जिन के लिये दरख़्त लगाना मुमकिन न हो वोह शजरकारी मुहिम में किस त़रह़ ह़िस्सा लें ?

जवाब : जिन के लिये दरख़्त लगाना मुमकिन न हो मसलन वोह फ़्लेट वग़ैरा में रहते हों या उन के घर में दरख़्त लगाने की गुन्जाइश न हो तो वोह गमलों में छोटे छोटे पौदे लगा दें कि येह जगह भी कम घेरते हैं और आसानी से लगाए भी जा सकते हैं।

घरों में गमले (Flowerpot) लगाने वाले इस्लामी भाई इस बात का ख़ास ख़याल रखें कि गमलों में डाली जाने वाली खाद (Fertilizer) में गाए वग़ैरा का गोबर (Dung) शामिल होता है जो नापाक है और येह गोबर सारी खाद को भी नापाक कर देता है नीज़ इस गोबर के मिट्टी हो जाने से पहले जो पानी इस में डाला जाता है वोह भी नापाक हो जाता है। इस पानी के बाहर निकलने के लिये गमलों के नीचे सूराख़ होता है तो जब तक गमलों की खाद पूरी त़रह़ मिट्टी नहीं हो जाती इस में से निकलने वाला पानी नजिस होगा इस से अपने बदन और कपड़ों को बचाना ज़रूरी है।

---

1 ....शजरकारी के ह़वाले से मज़ीद मा'लूमात ह़ासिल करने के लिये मुबल्लिग़े दा'वते इस्लामी व रुक्ने शूरा ह़ाजी अबू मन्सूर या'फ़ूर रज़ा अ़त्तारी سَلَّمَهُ الْبَارِی से राबित़ा कीजिये।

(शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

www.dawateislami.net

जिन के लिये मुमकिन हो वोह गमलों में गोबर वाली खाद न डालें बल्कि बाग़बान (Gardener) से मश्वरा कर के मिट्टी वाली खाद जिस में मख़्सूस केमीकल मिला होता है वोह डालें ताकि नापाकी का ख़त़रा ही न रहे।

कौन से पौदे लगाना ज़ियादा मुफ़ीद हैं ?

सुवाल : कौन से पौदे लगाना ज़ियादा फ़ाएदे मन्द हैं ?

जवाब : हर शहर की आबो हवा मुख़्तलिफ़ होती है, इसी के मुत़ाबिक़ पौदे लगाए जाएं तो ज़ियादा फ़ाएदा ह़ासिल होगा। मसलन बाबुल मदीना (कराची) में माह़ौलियाती आलूदगी ज़ियादा है और बारिशों का भी फ़ुक़्दान पाया जाता है तो यहां "नीम", "गुल मोहर", लिगनम", "सहांजना" के पौदे लगाना ज़ियादा फ़ाएदे मन्द हैं।

पौदे लगाने से पहले उन के माहिरीन मसलन बाग़बान वग़ैरा से मुशावरत कर ली जाए क्यूंकि बा'ज़ पौदों के लगाने का त़रीक़ा मुख़्तलिफ़ होता है, उन के लिये मख़्सूस पैमाइश पर घड़े की खुदाई और उस घड़े में मख़्सूस पानी की मिक़्दार रखना भी ज़रूरी होती है। माहिरीन से मुशावरत के बा'द पौदे लगाएंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ कसीर फ़वाइद ह़ासिल होंगे और देखते ही देखते सारी दुन्या में हरयाली ही हरयाली होगी, बिल खुसूस वत़ने अ़ज़ीज़ की हर गली मह़ल्ले में दरख़्तों और पौदों की येह हरयाली देख कर उ़श्शाक़ाने मदीना गुम्बदे ख़ज़रा की याद ताज़ा करेंगे।

ईसाले सवाब की निय्यत से दरख़्त लगाना कैसा ?

सुवाल : क्या बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن और अपने मर्हूमीन के ईसाले सवाब के लिये भी दरख़्त और पौदे लगाए जा सकते हैं ?

जवाब : जी हां ! बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن और अपने मर्हूमीन बल्कि ज़िन्दा लोगों के ईसाले सवाब के लिये भी दरख़्त और पौदे लगाए जा सकते हैं । तमाम आ़शिक़ाने रसूल को चाहिये कि वोह जो भी दरख़्त या पौदा लगाएं उस में किसी न किसी बुज़ुर्ग हस्ती मसलन सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ख़ुलफ़ाए राशिदीन, ह़सनैने करीमैन, ह़ज़रते सय्यिदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अ़ली असग़र और जुम्ला अह्ले बैते अत़्हार رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن नीज़ ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे पाक, ह़ज़रते सय्यिदुना ख़्वाजा ग़रीबे नवाज़, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान और दीगर बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِيْن के ईसाले सवाब की निय्यत ज़रूर करें ।

दरख़्त और पौदे लगाने की चन्द मज़ीद एह़तियातें

(**अज़ :** शैख़ुल ह़दीस वत्तफ़्सीर ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज मुफ़्ती अबू सालेह़ मुह़म्मद क़ासिम क़ादिरी अ़त्तारी مُدَّ ظِلُّهُ الْعَالِي)

(1) मिल्के ग़ैर (या'नी किसी दूसरे की मिल्किय्यत वाली ज़मीन) में मालिक की इजाज़त के बिग़ैर पौदे न लगाए जाएं । बाबुल मदीना में ख़ाली प्लॉटों की ता'दाद अगर्चे कम है मगर इस के इलावा मुल्क भर में बहुत से अ़लाक़े ऐसे हैं कि जहां ख़ाली प्लॉट बहुत बड़ी ता'दाद में मिल जाते हैं और वोह अक्सरो बेशतर लोगों की मिल्किय्यत में होते हैं लिहाज़ा अगर किसी ऐसी जगह पर कोई पौदा लगाना हो तो पहले उस के मालिक से इजाज़त लेना ज़रूरी है, क्यूंकि दूसरे की मिल्किय्यत में बिग़ैर उस की इजाज़त के तसर्रुफ़ करने की शरअ़न इजाज़त नहीं है । दूसरे की ज़मीन में

बिग़ैर उस की इजाज़त के पौदा लगाना तो दूर की बात है किसी मुसलमान की ज़र ख़ेज़ ज़मीन से उस की इजाज़त के बिग़ैर गुज़रना भी जाइज़ नहीं कि गुज़रने वाले पौदों को रोंदते और इधर उधर हाथ मार कर उन्हें तोड़ते हुए गुज़रेंगे जिस से मालिक का नुक़्सान होगा। अलबत्ता अगर किसी शख़्स की ज़मीन में आ़म गुज़रगाह बनी हुई है और वहां से गुज़रने का उ़र्फ़ है तो इस सूरत में वहां से गुज़रने में ह़रज़ नहीं।

(2) किसी की ज़मीन ख़ाली पड़ी देख कर उस का भला करते हुए बिग़ैर उस की इजाज़त के उस में दरख़्त न लगा दिया जाए, क्यूंकि हो सकता है कि जिस को भला समझा जा रहा है वोह बा'द में उस के लिये मुसीबत का बाइ़स बन जाए मसलन अगर किसी शख़्स ने अपनी ज़मीन मकान ता'मीर करने के लिये ख़ाली रखी हुई है और कोई वहां दरख़्त लगा दे तो चार पांच साल बा'द जब वोह मकान ता'मीर करने के लिये वहां पहुंचेगा तो उस के लिये उन दरख़्तों को उखेड़ना बहुत बड़ी मुसीबत बन जाएगा क्यूंकि इतने अ़र्से में दरख़्त की जड़ें दूर दूर तक ज़मीन की गहराई में जा चुकी होती हैं। लिहाज़ा किसी दूसरे की ज़मीन में दरख़्त और पौदे लगाने के लिये उस से इजाज़त लेना ज़रूरी है।

(3) अपने घर में पौदा लगाते वक़्त भी इस बात का ख़याल रखना ज़रूरी है कि हमारा येह पौदा दरख़्त बन कर दूसरों की तक्लीफ़ का बाइ़स न बने। उ़मूमन पौदे लगाते हुए दुरुस्त जगह का इन्तिख़ाब नहीं किया जाता और फिर जब पौदे बड़े हो कर दरख़्त की सूरत इख़्तियार कर लेते हैं तो उन की शाख़ें दाएं बाएं फैल कर पड़ोसियों के घरों का कुछ ह़िस्सा भी घेर लेती हैं और

फिर उन दरख़्तों की टहनियों पर बैठने वाले परन्दे जब बीटें करते हैं तो घर में गन्दगी होने के बाइस उन्हें ख़ूब तक्लीफ़ का सामना करना पड़ता है लिहाज़ा अपने घर में भी पौदे लगाते वक़्त इस बात का ज़रूर ख़याल रखिये कि येह पौदे दूसरों की तक्लीफ़ का बाइस न बनें।

(4) ऐसे पौदे लगाए जाएं जो माहोल के लिये फ़ाएदे मन्द साबित हों क्यूंकि बा'ज़ पौदे माहोल के लिये नुक़्सान देह भी साबित होते हैं मसलन बा'ज़ पौदे बहुत तेज़ी से ज़मीन का पानी जज़्ब करते हैं जिस की वज्ह से ज़ेरे ज़मीन पानी की सत्ह बहुत नीचे चली जाती है, अब अगर उन अ़लाक़ों में कसरत से इस त़रह के पौदे लगा दिये जाएं कि जहां लोगों का इन्हिसार सिर्फ़ ज़मीन के पानी पर होता है और उन्हें किसी दरया या नहर वग़ैरा से पानी नहीं मिल पाता तो येह पौदे उन के लिये बहुत बड़ी परेशानी का सबब बन जाएंगे। इसी त़रह बा'ज़ पौदे ख़ास क़िस्म की बू छोड़ते हैं जिसे आ़म त़ौर पर पसन्द नहीं किया जाता और वोह लोगों के लिये तक्लीफ़ का बाइस बनती है लिहाज़ा इस त़रह के पौदे भी हरगिज़ न लगाए जाएं। यूंही बा'ज़ अ़लाक़ों में बहुत से ऐसे दरख़्त मौजूद हैं कि जिन से मौसिमे ख़ज़ां या मौसिमे सर्मा की इब्तिदा में रूई उड़ती है जिस के ज़र्रात हवा में इस क़दर फेल जाते हैं कि दमे के मरीज़ों के लिये सांस लेना मुश्किल हो जाता है यहां तक कि उन दिनों में बा'ज़ लोगों को अपना शहर तक छोड़ना पड़ता है लिहाज़ा ऐसे दरख़्त लगाने से भी इजतिनाब किया जाए।

(5) कांटेदार पौदे लगाने से भी बचा जाए क्यूंकि उन्हें घर में लगाने की सूरत में बच्चों और घर के दीगर अफ़राद को तक्लीफ़ पहुंच सकती है। नीज़ अगर येह पौदे बढ़ कर दरख़्त की सूरत

इख़्तियार कर गए और उन की शाख़ें फैल कर पड़ोसियों के घरों तक पहुंच गईं तो उन्हें भी तक्लीफ़ का सामना करना पड़ेगा लिहाज़ा अगर ऐसे पौदे कुछ ख़ास एह़तियात़ों के साथ लगाए जाते हों तो उन एह़तियात़ों को पेशे नज़र रखते हुए उन्हें लगाया जाए या फिर उन्हें लगाने से ही इजतिनाब किया जाए।

(6) बा'ज़ लोग घर की बाहरी दीवार के साथ क्यारी बनाते और उस में पौदे लगाते हैं। बा'ज़ सूरतों में इस त़रह़ की क्यारियां बनाना मन्अ़ है मसलन घर के सामने वाली गली या सड़क पहले ही इतनी तंग है कि वहां से सिर्फ़ एक ही गाड़ी मुश्किल से गुज़र पाती है तो अब अगर गली या सड़क के कुछ ह़िस्से पर क़ब्ज़ा कर के उसे क्यारी बना दिया जाए तो पहले तंगी से गुज़रने वाली गाड़ियां मज़ीद तंगी से गुज़रेंगी लिहाज़ा इस त़रह़ की क्यारियां बनाने और उन में पौदे लगाने से बचना लाज़िम है। गलियां और सड़कें लोगों के चलने और उन की सुवारियां गुज़रने के लिये होती हैं जब कि दरख़्त लगाना एक ज़िम्नी चीज़ है और ज़िम्नी चीज़ से इस त़रह़ फ़ाएदा उठाया जाए कि वोह किसी चीज़ के मक़्सूदे अस्ली में रुकावट न बने।

(7) बहुत से लोग पौदे तो लगा देते हैं मगर इन की देख भाल नहीं करते ह़ालांकि बसा अवक़ात इन की देख भाल करना इन्हें लगाने से ज़ियादा ज़रूरी होता है मसलन बड़े शह्रों में दो सड़कों के दरमियान मौजूद ख़ाली जगह में सरकारी इदारे घास और पौदे लगाते हैं और इन की देख भाल करना भूल जाते हैं ह़ालांकि इन की देख भाल करना इन्हें लगाने से ज़ियादा ज़रूरी है क्यूंकि अगर इन पौदों की देख भाल नहीं की जाएगी तो येह पौदे बढ़ कर दरख़्त की सूरत इख़्तियार कर लेंगे और फिर इन की

शाख़ें बढ़ कर आधी सड़क तक पहुंच कर नीचें लटकने लगेंगी जिस के सबब बड़ी गाड़ियों का वहां से गुज़रना मुश्किल हो जाएगा और वोह शाख़ों से टकराती हुई गुज़रेंगी, अगर मोटर साईकल सुवार वहां से गुज़रेगा तो उस का चेहरा ज़ख़्मी होने का भी अन्देशा है लिहाज़ा पौदे लगाने के साथ साथ इन की देख भाल और कांट छांट करना भी ज़रूरी है।

(8) यूंही वक़्फ़ की जगहों में दरख़्त और पौदे लगाने में एह़तियात़ की ह़ाजत है। वक़्फ़ की जगहों में से एक जगह मस्जिद भी है, अगर किसी ने मस्जिद बनने से पहले ही मस्जिद की जगह में दरख़्त लगा दिये तो कोई ह़रज नहीं कि वक़्फ़ होने से पहले लगाए गए हैं, अलबत्ता जब वोह जगह मस्जिद के लिये वक़्फ़ हो चुकी तो अब उस में दरख़्त लगाना मन्अ़ है। छोटी मसाजिद जहां जगह की तंगी होती है वहां इस त़रह़ दरख़्त लगाने की इजाज़त नहीं।

(9) इसी त़रह़ मदारिस में भी दरख़्त लगाने में एह़तियात़ की ह़ाजत है, क्यूंकि मदारिस का मक़्सदे अस्ली शजरकारी नहीं बल्कि उ़लूमे दीनिया की ता'लीम है। अलबत्ता ज़िम्नी त़ौर पर फ़वाइद ह़ासिल करने के लिये वहां दरख़्त लगाए जा सकते हैं मसलन त़लबा कमरों में बैठ कर पढ़ते हैं तो उन्हें गर्मी से बचने के लिये पंखा और रौशनी ह़ासिल करने के लिये बत्तियां जलाना पड़ती हैं लिहाज़ा अगर मद्रसे में ख़ाली जगह मौजूद है तो वहां इस मक़्सद से दरख़्त लगाए जा सकते हैं कि दोपहर के वक़्त दरख़्तों के साए में बैठ कर त़लबा के लिये पढ़ना मुमकिन हो जाए। इस में भी इस बात का ख़याल रखा जाए कि दरख़्त लगाने की वज्ह से मद्रसे के मक़्सदे अस्ली (या'नी ता'लीम और इस के इ़लावा अख़राजात) में ह़रज वाक़ेअ़ न हो मसलन मद्रसे में कमरे बनाने की ह़ाजत है और वहां

कमरे बनाने के बजाए दरख़्त लगा दिये जाएं तो अस्ल मक़्सद पीछे रह जाएगा और जो ज़िम्नी और ग़ैर ज़रूरी चीज़ है वोह फ़ौक़िय्यत ले जाएगी लिहाज़ा इस त़रह़ की सूरतों में मदारिस में दरख़्त लगाने की इजाज़त नहीं। **ख़ुलासा** येह है कि नेकी का काम ज़रूर किया जाए मगर उसे इस अन्दाज़ में किया जाए कि वोह दूसरों के लिये तक्लीफ़, ज़ह़मत और परेशानी का बाइस न बने। बहुत सी नेकियां ऐसी होती हैं कि उन की फ़ज़ीलत, अहम्मिय्यत और तरग़ीब के पेशे नज़र उन्हें किया जाता है मगर बे एह़तियात़ी के साथ उन नेकियों को करने के सबब मुसलमान तक्लीफ़ में मुब्तला हो जाते हैं जिस के बाइस उन का नेकी वाला पहलू पीछे रह जाता है और गुनाह वाला पहलू आगे बढ़ जाता है लिहाज़ा नेकियां करते हुए उन की एह़तियात़ों को पेशे नज़र रखना ज़रूरी है।

दुआए अत्तार

या **अल्लाह** पाक ! तुझे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और ह़ज़रते सय्यिदुना सलमान फ़ारसी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه के उस मुबारक बाग़ का वासित़ा जिस में मेरे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दरख़्त लगाए, जो कोई कम अज़ कम 12 पौदे लगाए या किसी को इस की तरग़ीब दिलाए उस को उस वक़्त तक मौत न आए जब तक वोह ख़्वाब में तेरे प्यारे मह़बूब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दीदार न कर ले।[1] اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

مدینہ

1....शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के तरग़ीब दिलाने पर मजलिसे राबित़ा बराए ताजिरान के इस्लामी भाइयों ने शजरकारी मुहिम में ह़िस्सा लेने के लिये ज़कात के इलावा 12 लाख पौदों की रक़म मजलिस शजरकारी को पेश करने की निय्यत की है। (शो'बए फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़्हा	उ़नवान	सफ़्हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	वक़्फ़ की जगहों पर दरख़्त लगाने की एह़तियातें	13
पौदे लगाना कैसा ?	1	दरख़्त लगाना मुमकिन न हो तो ?	14
अह्ले फ़ारस की त़वील उ़म्र होने की वज्ह	4	कौन से पौदे लगाना ज़ियादा मुफ़ीद हैं ?	15
पौदे लगाने के फ़ज़ाइल	5	ईसाले सवाब की निय्यत से दरख़्त लगाना कैसा ?	15
पौदे लगाने की एह़तियातें	6	दरख़्त और पौदे लगाने की चन्द मज़ीद एह़तियातें	16
शजरकारी के साइन्सी फ़वाइद	7	दुआ़ए अ़त्तार	21
शजरकारी के मआ़शी और मुआ़शरती फ़वाइद	8	फ़ेहरिस्त	22
शजरकारी मुहिम की अच्छी अच्छी निय्यतें	11	सब्ज़े की त़रफ़ देखने से बीनाई तेज़ होती है	22
शजरकारी मुहिम और इस की एह़तियातें	12		

सब्ज़े की त़रफ़ देखने से बीनाई तेज़ होती है

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِي फ़रमाते हैं : चार चीज़ें आंखों की (बीनाई की) तक़्विय्यत का बाइ़स हैं : (1) क़िब्ला रुख़ बैठना (2) सोते वक़्त सुर्मा लगाना (3) सब्ज़े की त़रफ़ नज़र करना और (4) लिबास को पाको साफ़ रखना। (اِحیاءُ العلوم، کتاب آداب الاکل، الباب الرابع فی آداب الضیافۃ، ۲/۲۷ دار صادر، بیروت)

हिन्दुस्तान में भी शजरकारी की धूम धाम

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** ने धूम धाम से शजरकारी मुहिम का आग़ाज़ किया है जिस के पेशे नज़र **निगराने हिन्द मुशावरत "सय्यिद आ़रिफ़ अ़ली अ़त्तारी"** ने **दा'वते इस्लामी** से वाबस्ता हिन्द के तमाम मुसलमानों को वत़ने अ़ज़ीज़ हिन्दुस्तान में **12 मीलियन** (या'नी एक करोड़ बीस लाख) पौदे लगाने का हदफ़ अ़त़ा फ़रमाया है। अगर हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन **बारह बारह** पौदे लगाने का अ़ज़्मे मुसम्मम (पुख़्ता इरादा) कर ले तो येह हदफ़ पूरा होगा और हमारे मुल्क को दरख़्तों से मज़ीद हरा भरा और सर सब्ज़ो शादाब बनाने में मदद मिलेगी। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमे'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबियत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

मेरा मदनी मक़्सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ

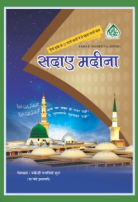

DAWAT-E-ISLAMI

0133172

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- ❁ देहली :- मक्तबतुल मदीना, उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
- ❁ अह़मदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अह़मदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
- ❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा स्ट्रीट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
- ❁ हैदराबाद :- मक्तबतुल मदीना, मुग़ल पुरा, पानी की टांकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

E- mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net